रजि. क्रमांक : 182/उदयपुर/2011-12
सूचना - पत्र क्रमांक-01/2020

Talesara
TVs
An effort for togetherness

"पाथेय"

तलेसरा विकास संस्थान

कार्यालय : 98, बड़ा बाजार, चौमुखा मन्दिर के पास, उदयपुर-313001 (राज.)
Web : www.talesara.org • email : tvsudaipur@gmail.com

अध्यक्षीय अनुरोध

सम्मानीय बंधुगण,
सादर अभिवादन

तलेसरा समाज की पारिवारिक सूचना-पत्र "पाथेय"-1 के प्रथम संस्करण को आप सभी के हाथों में समर्पित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। पारिवारिक सूचना-पत्र "पाथेय"-1 समाज का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, इसके द्वारा परिवार में हो रही समस्त गतिविधियों की जानकारी निरंतर प्राप्त होती रहेगी।

आप सभी की जानकारी के लिए तलेसरा विकास संस्थान की स्थापना सन् 2012 में मुख्य रूप से निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की गई थी :-

समाज के सभी समुदायों के परिवारों के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं भ्रातृत्व मेलजोल को बढ़ावा देने, समाज के विकास हेतु, समाज के वृद्धजनों, मेधावी छात्रों का सम्मान करना, स्मारिका प्रकाशित करना और वे सभी कार्य जो समाज की उन्नति के लिए जरूरी हों आदि उद्देश्य के लिए किया गया था।

समाज द्वारा स्थापित विधान और नियमावली के अनुरूप सभी कार्यकारिणी सदस्य उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तन मन धन से कार्यरत हैं। इस सम्बन्ध में प्रतिवर्ष समग्र तलेसरा परिवार का विराट सम्मेलन उदयपुर में होता है, जिसमें विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम जैसे खेलकूद, शिक्षा, वृद्धजनों व अन्य क्षेत्रों में विशेष योग्यता प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली सदस्यों का सम्मान किया जाता है।

वर्ष 2018 में तलेसरा समाज की पारिवारिक निर्देशिका भी प्रकाशित की गई थी जिसमें नई सूचनाएँ प्राप्त होने पर सम्पादित संस्करण प्रकाशित करना भी प्रस्तावित है। वर्ष 2019 में भोपाल सागर स्थित करेड़ा पार्श्वनाथ मंदिर प्रांगण में सती माता जी की स्थापना बड़े हर्षोल्लास एवं विधि विधान से की गई। माता का आशीर्वाद हम सभी पर सदैव बना रहे, यही प्रार्थना है।

मैं समाज के सभी वरिष्ठजनों एवं सदस्य बन्धुओं के प्रति आभार ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने हमारे अनुरोध को स्वीकार करके अपने मौलिक आलेख, जैन धर्म से सम्बंधित जानकारी, कविता, कहानी, स्वास्थ्य सम्बन्धों सूचनाएँ एवं महत्त्वपूर्ण सुझाव समय-समय पर दिये जाने का विश्वास दिलाया है।

तलेसरा समाज की पारिवारिक सूचना-पत्र "पाथेय"-1 के प्रथम संस्करण के लिए मैं विशेष रूप से हमारे सचिव श्री प्रकाश जी तलेसरा और कोषाध्यक्ष श्री वैभव जी तलेसरा का भी धन्यवाद प्रेषित करता हूँ जिन्होंने अल्प समय में ये प्रथम संस्करण प्रकाशित किया है। Covid 19 महामारी के चलते सभी सदस्यों से पूर्ण सावधानी बरतते हुए Lockdown के समय का आध्यात्मिक एवं रचनात्मक कार्यों में सदुपयोग की आशा करता हूँ।

आपका शुभेच्छु
डॉ. पवन तलेसरा

सचिव की कलम से...

प्रस्तुत सत्र का यह प्रथम सूचना–पत्र ''पाथेय''–1 आप सभी की जानकारी हेतु प्रेषित करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। सम्पर्क विहीन संस्था मृत प्रायः होती है। वैज्ञानिक युग के इस दौर में और विशेष रूप से इस समय में डिजिटल मैगजीन का प्रकाशन भी महत्त्वपूर्ण है। समाज की गतिविधियों, कार्यक्रमों, सेवा कार्य और उपलब्धियों के एक–एक कदम को आगे बढ़ाने का यह सूचना–पत्र ''पाथेय''–1 अपने दायित्व को निभाने का कार्य कर रही है।

सूचना–पत्र ''पाथेय''–1 प्रत्येक प्रष्ठ पर आपके अपनेपन का स्पर्श, वैचारिक अभिव्यक्ति और बोलती तस्वीरे आपको अपनेपन का अहसास करा पाएगी।

इस सूचना–पत्र ''पाथेय''–1 की संरचना के पीछे सभी वयोवृद्ध माता–पिता तुल्य और सभी सदस्यों साथियों की प्रेरणा रही है। आप सभी की प्रेरणा, संबल और पीठ की थपथपाहट हमारे पीछे रहती है जिससे हमें सफलता की मंजिल चुनने का हौंसला बनता है। बन्धुवर इस सूचना–पत्र ''पाथेय''–1 के प्रकाशन के पीछे सिर्फ एक ही उद्देश्य है कि सभी तलेसरा परिवार के सदस्य का सर्वांगीण विकास हर क्षेत्र में हो सके।

आप सभी के द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग इस छोटे से प्रयास की कीमत, विश्वास और प्यार का तौहफा होगा।

हमारे पास कई परिवारों के पारिवारिक वट–वृक्ष और भी आये हैं। स्थानाभाव के कारण शेष सामग्री को अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

इस सूचना–पत्र ''पाथेय''–1 के प्रकाशन एवं सम्पादन में पूर्ण सजगता बरती है तथापि त्रुटि रह जाना असंभव नहीं है। तमाम कोशिशों के बावजूद भी प्रकाशन में त्रुटियाँ हो सकती है। अतः किसी भी प्रकार की जाने–अनजाने में हुई त्रुटियों के लिए क्षमाप्रार्थी और आप सभी के स्नेह एवं प्रोत्साहन की अभिलाषा के साथ....

आपका शुभेच्छु
प्रकाश तलेसरा

C:/Desktop/PC Talesra/PC Talesra_book_2020.cdr

चित्रमय झलकियाँ

C:/Desktop/PC Talesra/PC Talesra_book_2020.cdr

कोरोना

दया प्रेम करुणा बिना, चले नहीं संसार
जियो जीने दो सदा, समझो जग परिवार
करुणा बिन संसार का, चले न किंचित काम
आज जगत भयभीत है, सुन कोरोना नाम
अगणित लाशो से परे, देश कई सम्पन्न
कोरना से लग रहे, उनसा कौन विपन्न
कोरोना के कहर ने, छीना सब उल्लास
दुनिया घर में कैद हो, बैठी आज उदास
नहीं कुदरत के दण्ड का, होता है उपचार
धन यौवन विज्ञान सब, हो जाते सब लाचार
कोरोना का वायरस, खोल रहा है खोल
डॉक्टर डंडा पुलिस का, इसके आगे फैल
हिंसा अत्याचार, का जब जब बढ़ता ज्वार
कुदरत के घर न्याय है, देती गर्व उतार
अपने अपने इष्ट का, करिए घर में जाप
लक्ष्मण रेखा द्वार पर, खीच दीजिये आप
विघ्न मिटे संकट कटे, भय का रहे ना काम
पुष्कर देव गणेश का, नित जपिए शुभ नाम
प्रधान सेवक देश का, कहे वो माने बात
बचा स्वयं को दीजिये, कोरोना को मात
मुहपट्टी महिमा बढ़ी, लिया जगत ने जान
"मुनि जिनेन्द्र" जिन धर्म है, जग में बड़ा महान

...... अगर तुम न होती

कोरोना 'तुम' ना होती तो कुछ और बात होती
दोस्तों से सिर्फ फोन पर नहीं बल्कि मिल बैठ
कर मुलाकात होती
सुबह शाम घूमना होता, बाग बगीचों की
खुशबू साथ होती
ये कौन हवा में जहर घोल गया, कि हर सांस
में एक डर सा भर गया
अपना भी पराया लगने लगा, बिन खाई के
दूर कर गया
लेकिन ऊपर वाले का शुक्रिया कहें कि जीने का
उसूल समझा गया
जिन्दगी की आपा धापी में सुकून के दो पल
महसूस करा गया
अपने ही भूल बिसरे संस्कारों को फिर से याद
दिला गया
इंसान ही क्या पंछी, नदिया, 'पवन' के झोंको
को, प्रदूषण मुक्त खुले आसमाँ में झुला गया
शाम पांच बजे थाली-ताली-घंटी बजी
और सारे दर्द भुला गया
सारे दर्द भुला गचा ....

- डॉ. पवन तलेसरा

(लोकडाउन के पहले दिन 22.3.2020 रचित)

जय जिनेन्द्र प्रार्थना

जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिए
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से अपना मौन खोलिए
सुर असुर जिनेन्द्र की महिमा को नहीं गा सके
और गौतम स्वामी ना महिमा का पार पा सकें,

जय जिनेन्द्र बोलकर जिनेन्द्र भाक्ति तोलिए
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिए

जय जिनेन्द्र ही हमारा एक मात्र मंत्र हो
जय जिनेन्द्र बोलने को हर मनुज स्वतन्त्र हो
जय जिनेन्द्र बोल-बोल खुद जिनेन्द्र हो लिए
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिए

पाप छोड़ धर्म जोड़ ये जिनेन्द्र देखना
अष्ट कर्म को मरोड़ ये जिनेन्द्र देखना
जाग जाग जाग चेतना बहुकाल सो लिए
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिए

है जिनेन्द्र ज्ञान दो मोक्ष का वरदान दो
कर रहे हैं प्रार्थना हम प्रार्थना पर ध्यान दो
जय जिनेन्द्र बोलकर हृदय के द्वार खोलिए
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिए।

C:/Desktop/PC Talesra/PC Talesra_book_2020.cdr

जीवन का ध्येय : विसर्जन

काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकार है और जब हम इनका त्याग करते हैं तो यही विसर्जन है। साथ ही जहाँ खुद का ध्यान न रहे यानि इस आत्मतत्व को जब हम उस परमतत्व में विलीन कर देते हैं तो हम स्वयं का विसर्जन करते हैं। कोई भी मनुष्य न तो सम्पूर्णतया अच्छा है और न ही कोई सौ फीसदी खराब। प्रत्येक मनुष्य में अच्छी और खराब दोनों आदतों का सम्मिश्रण होता है, लेकिन प्रत्येक मनुष्य के जीवन का ध्येय यही होना चाहिए कि वह विकारों से दूर रहे। हमें हमेशा खराब आचरण को दूर करके सदाचरण को अपनाना चाहिए। बहुत से लोग नए साल में या किसी अन्य विशेष दिवस पर संकल्प करते हैं कि वे अपनी समस्त खराब आदतें त्याग देंगे, लेकिन उनका संकल्प दो–चार दिन में ही टूट जाता है। इसका काण उनका मन है जिसे वे साथ नहीं पाते और यही मन उन्हें विचलित कर देता है।

इसके लिए अपनी इच्छाशक्ति भी दृढ़ करनी चाहिए। उसे मन से दृढ़तापूर्वक यह मानना चाहिए कि निश्चित तौर पर खराब आदतें दूर हो सकती हैं। खराब आदतें मनुष्य का चरित्र नहीं, बल्कि उसका स्वभाव है और वह इससे छुटकारा पा सकता है। विसर्जन का मतलब यही है कि ब्रह्मांड से हम आत्मतत्व के रूप में आए और फिर उसी में विलीन हो गए। कबीरदास जी से किसी ने पूछा कि यह आत्मा क्या है और मनुष्य के मरने के बाद यह कहां चली जाती है? कबीरदास जी ने कहा कि जैसे घड़े में आप पानी रखिए और उसे तालाब में रख दीजिए तो घड़े और तालाब का पानी अलग–अलग होगा, लेकिन जैसे ही घड़ा फूटता है वैसे ही भीतर का पानी तालाब में मिल जाता है। इसी तरह हमारा शरीर भी एक घड़ा है। आत्मा इसके अंदर जल के समान है। जैसे ही यह शरीर से निकलती है तो वह सागर रूपी ब्रह्माण्ड में मिल जाती है। मनुष्य को सोचना चाहिए कि जो कुछ भी दुनिया में चल रहा है यह सब प्रभु की संरचना है और इसमें हम मात्र एक खिलौने हैं। हम केवल अपना रोल निभाने आए हैं और अपने हिस्से का अभिय करके चले जाएंगे। जब व्यक्ति को हमेशा इस बात का ज्ञान और आभास रहता है कि इस दुनिया में जो कुछ भी है। अभिनय इसमें कुछ भी शाश्वत नहीं है तथा सभा कुछ अस्थायी है तभी मनुष्य स्वयं को विसर्जित कर पाता है।

हार्दिक शुभकामनाएँ :– प्रकाश तलेसरा परिवार

Badhai

The Wedding Dresses

AVAILABLE ON RENT AND SALE

शेरवानी | रेडिमेड सूट

लहंगा चोली | वैडिंग गाउन

कुर्ता पायजामा | ज्वेलरी एवं साफा

1, Residency Road, Opp. Hanuman ji Temple
Near Meera Girls College, Udaipur
Contact : 9269738666, 9784635333

आधुनिक जीवन शैली एवं योग

अतिव्यस्त तथा अर्थप्रधान जीवन शैली अपनाने से आज व्यक्ति तनाव, रोगग्रस्त, अनिन्द्रा, निराशा, मानसिक असन्तुलन का शिकार बनता जा रहा है। आधुनिकता की अंधी दौड़ और अनियमित जीवन शैली ने व्यक्ति के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डाला है। वर्तमान में सोशल मीडिया ने जीवन शैली को बदल कर रख दिया है। देर रात जागना, सुबह देर से उठना और इसके बाद काम पर चले जाना ही जीवन हो गया है। ऐसे में खान–पान का प्रभावित होना जरूरी हो जाता है। फास्टफूड, डिब्बा बन्द एवं होटल के खानों का प्रचलन बढ़ता जा रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में 10 से 24 आयुवर्ग के करीब 23 लाख युवा हर वर्ष असामायिक मौत के शिकार हो जाते हैं। हाल के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2005–06 की तुलना में भारत में मोटे या अधिक वजन के लोगों की संख्या बढ़ रही है। मधुमेह, तनाव एवं अवसाद से युवावर्ग कुंठित हो रहा है।

व्यक्ति की जीवन शैली को सुधारने, शरीर को निरोग बनाने एवं **जीवन जीने की कला सिखाने में योग का महत्त्वपूर्ण स्थान** है। भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक विकास के लिए मन पर नियन्त्रण की प्रेरणा योग द्वारा प्राप्त होती है। गृहस्थियों के लिए भी योग सन्मार्ग है। यदि हम अपने लिए प्रातः कालीन ब्रह्म वेला में अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार आधे से एक घण्टे का समय शरीर की सेवा हेतु निकाले तो बहुत लाभ होंगे। योग से पूर्व दीर्घ श्वांस, अनुलोम विलोम, कपाल भाँति शरीर के स्वस्थ रहने हेतु अत्यावश्यक है। योग के मुख्य आठ अंग है– यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि।

पाँच यम है : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह।

पाँच नियम है : शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्राणिधान।

निश्चल सुखपूर्वक बैठने का नाम आसन है। बैठते समय सिर गला एवं रीढ़ की हड्डी सीधी एवं स्थिर हो। आसन से मन में एकाग्रता आती है तथा व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियां जागृत होती है। योगासनों के नियमित अभ्यास से शरीर स्वस्थ बनता है। मुख्य आसन पद्मासन, तुला आसन, वज्रआसन, शशांक आसन, भुजंग आसन आदि है। इनका प्रयोग क्षमता अनुसार करना चाहिए। सूर्य नमस्कार एवं विभिन्न मुद्राएं भी महत्वपूर्ण है।

ध्यान से मन की चंचलता समाप्त होती है तथा एकाग्रता आती है।

स्वयं को फिट रखने एवं स्वस्थ रहने हेतु योग का नियमित अभ्यास अत्यावश्यक है। दरअसल योग सम्पूर्ण मानवता को भारतीय संस्कृति की ओर से वो अमूल्य तोहफा है, जो शरीर और मन, कार्य और विचार, संयम और सन्तुष्टि तथा मनुष्य और प्रकृति के बीच एक सामंजस्य स्थापित करता है।

– डॉ. अनिता तलेसरा

प्रतिक्रमण

प्रतिक्रमण वाशिंग मशीन है, जो हमारे दोष धोती है।
प्रतिक्रमण वह न्यायालय है जहां पापों को स्वीकार किया जाता है।
प्रतिक्रमण सी.आई.डी. है जो हर एक दोष को खोजता है और निकालता है।
प्रतिक्रमण वह सर्जन है जो आत्मा को दूषित होने पर काम करता है।
प्रतिक्रमण वह सेवक है जो हमारे बुरे विचारों की शुद्धि करता है।
प्रतिक्रमण वह मोबाइल फोन है जिसका कनेक्शन सीधा हमारी आत्मा के साथ होता है।
प्रतिक्रमण एक मुहुर्त के भीतर अनंत पुनर्जन्म को समाप्त करने की प्रक्रिया है।
प्रतिक्रमण अनंत तीर्थंकरों का उपदेश है।

C:/Desktop/PC Talesra/PC Talesra_book_2020.cdr

प्रतिरोधक क्षमता के लिए च्यवनप्राश

च्यवनप्राश के चमत्कारी गुणों के बारे में प्रायः सभी जानते हैं। इस आयुवैदिक जड़ी बूटियों वाले टॉनिक में अद्‌भुत स्वास्थ्य लाभ छिपे हुए हैं। यह माना जाता है कि च्यवनप्राश की खोज 'च्यवन' नामक एक ऋषि द्वारा की गयी थी। उन्होंने ही पहली बार अपने यौवन और आयु को बढ़ाने के लिए इस चमत्कारी टॉनिक की खोज की थी। च्यवनप्राश में एंटी एजिंग तत्व मौजूद है जो पूरी तरह से हर्बल हैं। इसमें आँवला मुख्य सामग्री है जो बेहद शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट माना जाता है। ज्ञात हो कि झुर्रियाँ, महीन रेखाएं और सफेद बाल बुढ़ापा आने के सूचक हैं। च्यवनप्राश में भारी मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट पाया जाता है जिससे ये आपको युवा रहने में मदद करता है।

च्यवनप्राश क्या होता है :

आयुर्वेद में च्यवनप्राश की बड़ी महता बताई गई है। यह एक आयुवैदिक औषधि है जो बच्चे से लेकर बूढ़े सबको निरोग रखता है। इसे बनाने के लिए 40–50 घटकों की जरूरत पड़ती है। लेकिन मुख्य घटक आंवला है। ताजा आंवला विटामिन सी का बेहतरीन स्त्रोत होता है। इसे सुखाने या जलाने के बावजूद इसमें मौजूद विटामिन सी की मात्रा कम नहीं होती। च्यवनप्राश में औषधीय महत्त्व वाली लगभग 36 तरह की जड़ी–बूटियां होती हैं। केशर, नागकेधर, पिप्पली, छोटी इलायची, दालचीनी, बन्सलोचन, शहद और तेजपत्ता, पाटला, अरणी, गंभारी, विल्व और भयोनक की छाल, नागमोथा, पुष्करमूल, कमल गट्टा, सफेद मूसली सहित कई वनस्पतियां मिलाकर च्यवनप्राश तैयार किया जाता है।

च्यवनप्राश के काम करने की विधि :

कोशिकाओं की उम्र नहीं बढ़ने देता। शरीर के ऊतकों के पोषण स्तर में सुधार लाता है। मुक्त कणों से होने वाले नुकसान से व्यक्ति की त्वचा की रक्षा करता है। पाचन शक्ति बढ़ाता है (जो खूबसूरत त्वचा पाने के लिए महत्त्वपूर्ण है) शरीर के गहरे उतकों को ऑक्सीजन की कमी से बचाता है। स्मृति, एकाग्रता और सतर्कता में वृद्धि करता है। शरीर के इम्यून सिस्टम में सुधार और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। रेस्पिरेटरी सिस्टम को मजबूत करता है। मासिक धर्म को नियमित करता है (प्री मेंस्टुअल सिंड्रोम को कम करता है)। जुकाम और संक्रमण से रक्षा करता है।

With Best Compliments From :

CA CS (Dr.) Pawan Talesara
P. Talesara & Associates
Practicing Co. Secretary
Mob.: 94141 58294
tcsindya@gmail.com

Gagan Talesara
Shivam Enterprises
Real Estate Consultant
Mob.: 98280 58247
gagan.talesara@gmail.com

Lokesh Talesara
TCS (India) International
Export-Import Consultant
Mob.: 92144 60694
lokeshtalesara@gmail.com

212-213, Anand Plaza, University Road, Udaipur-313001 (Raj.)
Tel. : # 91 0294 2429624

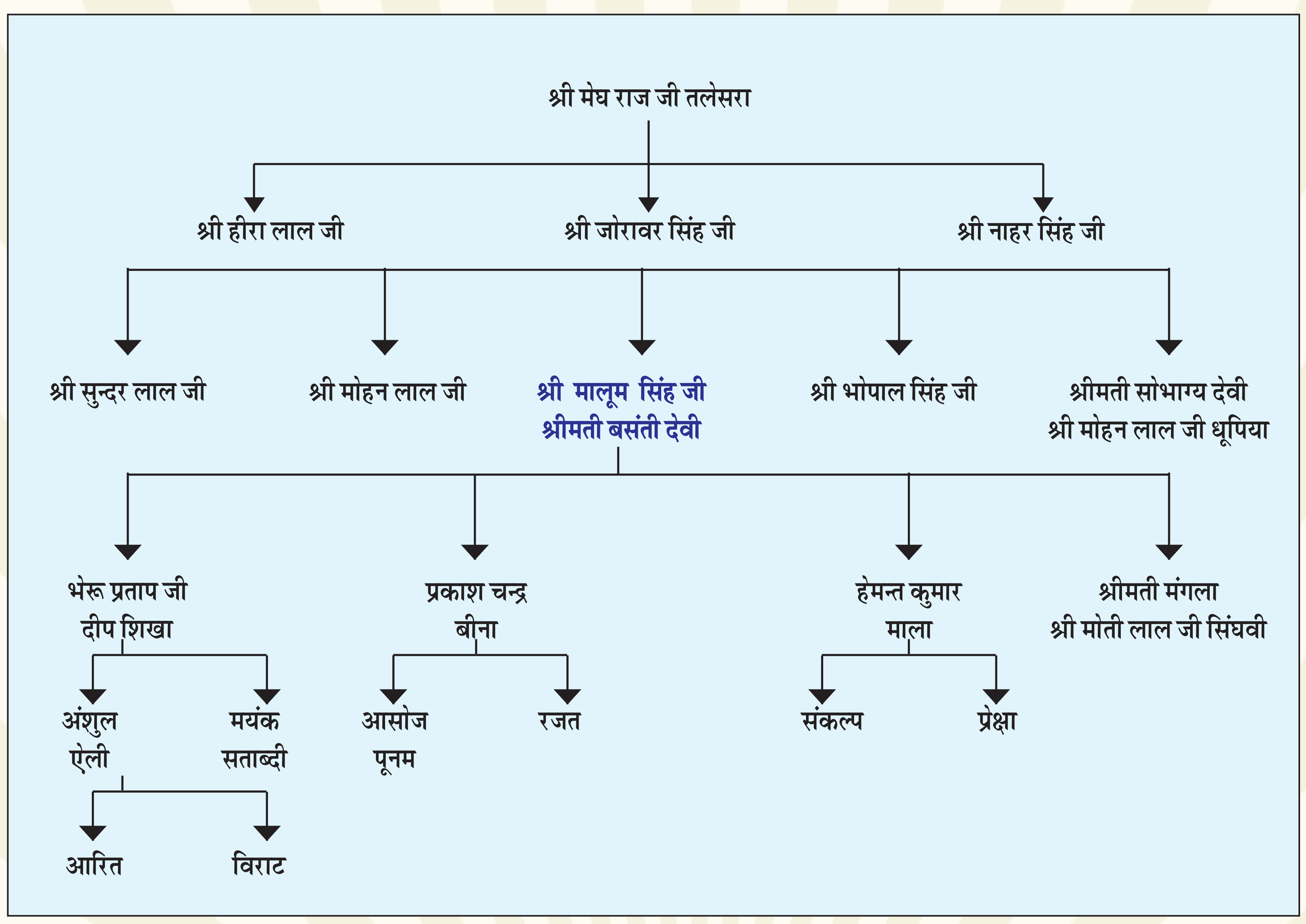
श्री मेघ राज जी तलेसरा
श्री हीरा लाल जी
श्री जोरावर सिंह जी
श्री नाहर सिंह जी
श्री सुन्दर लाल जी
श्री मोहन लाल जी
श्री मालूम सिंह जी
श्रीमती बसंती देवी
श्री भोपाल सिंह जी
श्रीमती सोभाग्य देवी
श्री मोहन लाल जी धूपिया
भेरू प्रताप जी
दीप शिखा
प्रकाश चन्द्र
बीना
हेमन्त कुमार
माला
श्रीमती मंगला
श्री मोती लाल जी सिंघवी
अंशुल
ऐली
मयंक
सताब्दी
आसोज
पूनम
रजत
संकल्प
प्रेक्षा
आरित
विराट

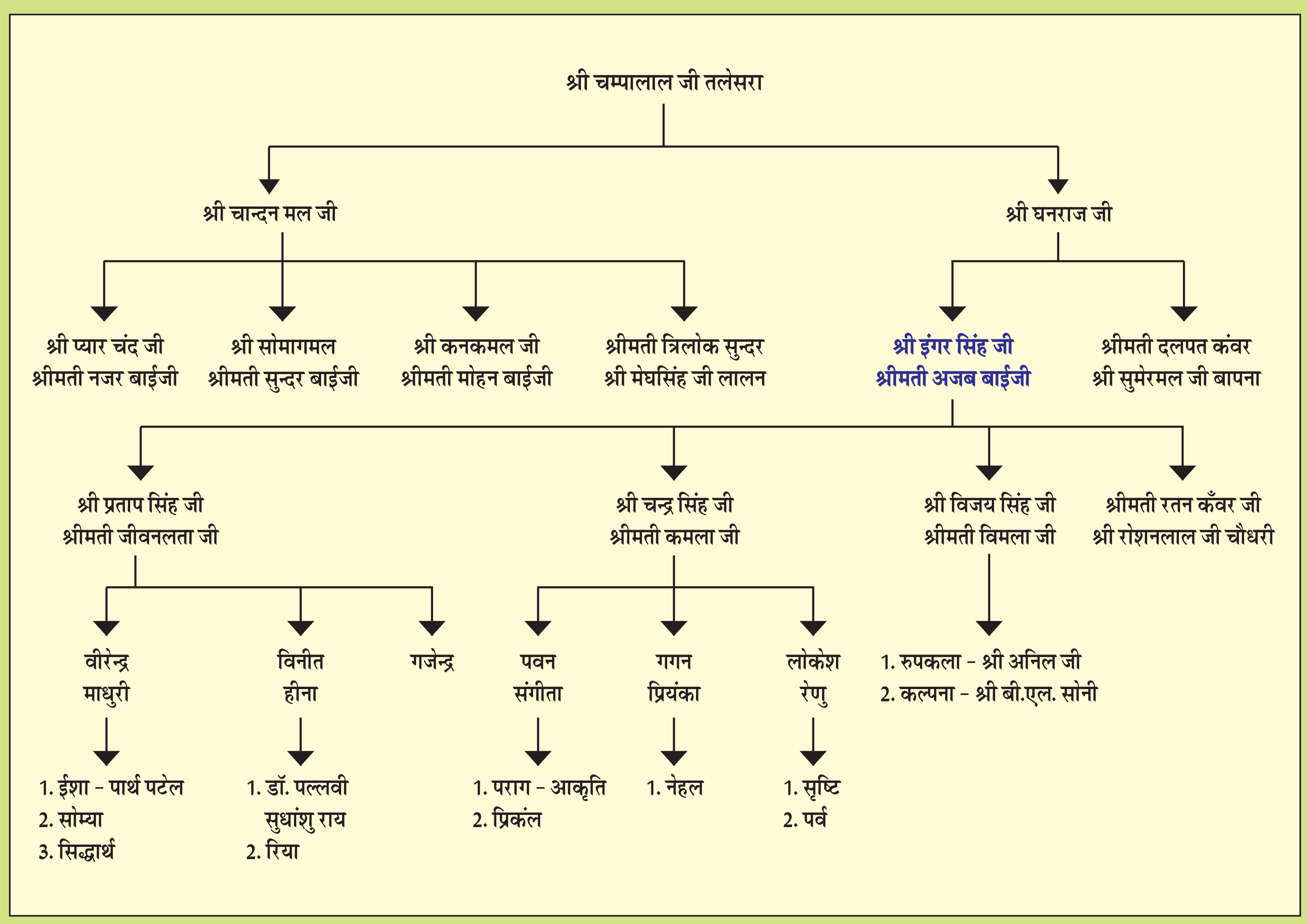
श्री चम्पालाल जी तलेसरा
श्री चान्दन मल जी
श्री घनराज जी
श्री प्यार चंद जी
श्रीमती नजर बाईजी
श्री सोमागमल
श्रीमती सुन्दर बाईजी
श्री कनकमल जी
श्रीमती मोहन बाईजी
श्रीमती त्रिलोक सुन्दर
श्री मेघसिंह जी लालन
श्री डूंगर सिंह जी
श्रीमती अजब बाईजी
श्रीमती दलपत कंवर
श्री सुमेरमल जी बापना
श्री प्रताप सिंह जी
श्रीमती जीवनलता जी
श्री चन्द्र सिंह जी
श्रीमती कमला जी
श्री विजय सिंह जी
श्रीमती विमला जी
श्रीमती रतन कँवर जी
श्री रोशनलाल जी चौधरी
वीरेन्द्र
माधुरी
विनीत
हीना
गजेन्द्र
पवन
संगीता
गगन
प्रियंका
लोकेश
रेणु
1. रुपकला - श्री अनिल जी
2. कल्पना - श्री बी.एल. सोनी
1. ईशा - पार्थ पटेल
2. सोम्या
3. सिद्धार्थ
1. डॉ. पल्लवी
सुधांशु राय
2. रिया
1. पराग - आकृति
2. प्रिकंल
1. नेहल
1. सृष्टि
2. पर्व

- श्री जड़ावचन्द जी तलेसरा
  - श्री धनराज जी
  - श्री तेज सिंह जी
    - श्री भँवरलाल जी
    - श्री शंकरलाल जी
    - श्री मोती सिंह – ताड़जी
      - **श्री बसन्ती जी – श्रीमती सरिता**
        - नीलिमा
        - वैभव – पायल
          - अथर्व
          - कनिष्का
        - सौरभ
      - मन्जु
      - मीना
      - मधु

- श्री शोभा लाल जी तलेसरा
  - श्री भूरी लाल जी – अम्बा बाई जी
    - श्री रघुनाथ सिंह जी
    - **श्री गणेशलाल जी – कमला देवी**
      - राजेश – लक्ष्मी
        - साहिल
      - दिनेश
    - श्री प्रेम सिंह जी – केशर देवी
      - मुकेश

C:/Desktop/PC Talesra/PC Talesra_book_2020.cdr

पारिवारिक वट वृक्ष

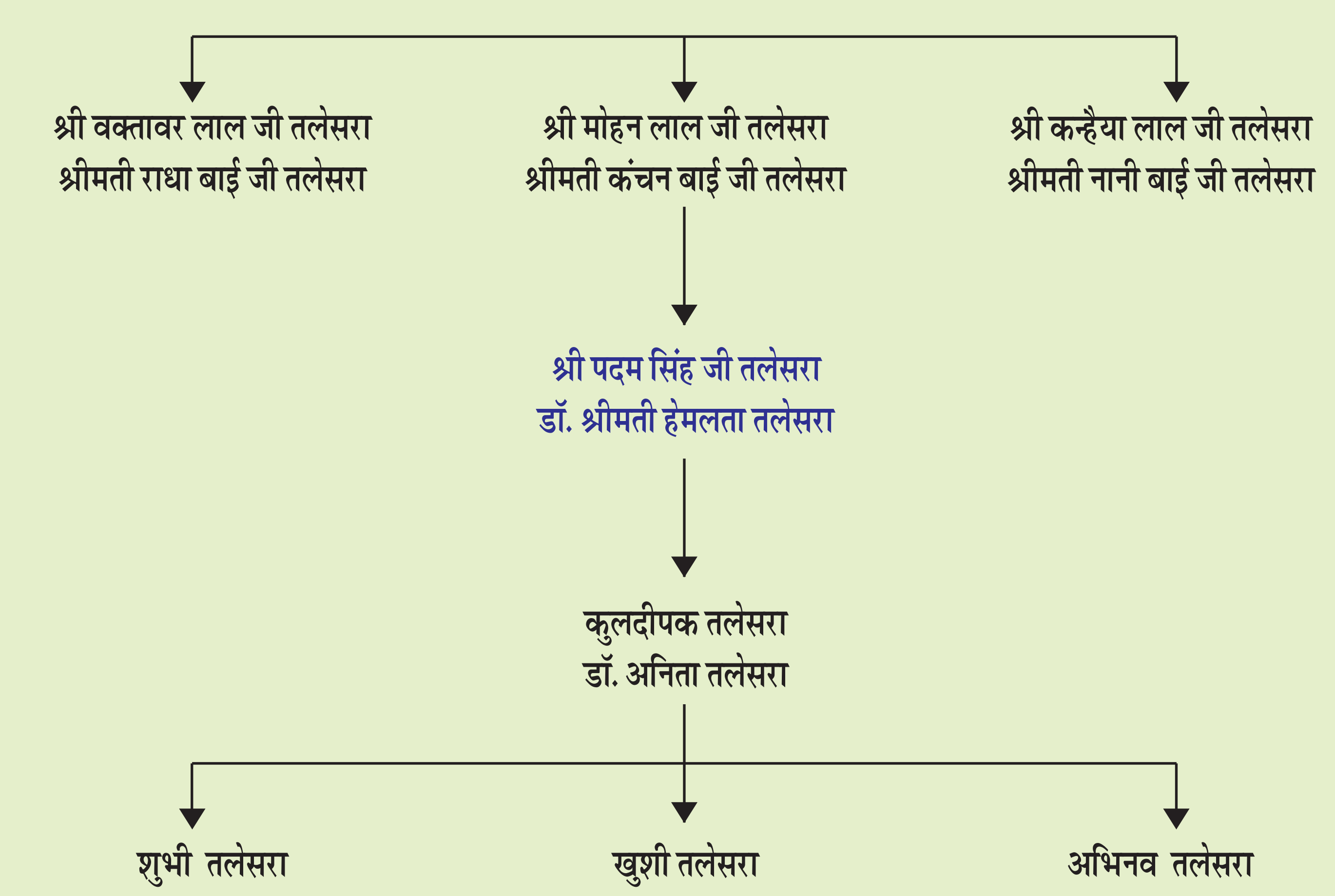
श्री वक्तावर लाल जी तलेसरा
श्रीमती राधा बाई जी तलेसरा
श्री मोहन लाल जी तलेसरा
श्रीमती कंचन बाई जी तलेसरा
श्री कन्हैया लाल जी तलेसरा
श्रीमती नानी बाई जी तलेसरा
श्री पदम सिंह जी तलेसरा
डॉ. श्रीमती हेमलता तलेसरा
कुलदीपक तलेसरा
डॉ. अनिता तलेसरा
शुभी तलेसरा
खुशी तलेसरा
अभिनव तलेसरा

शुभकामनाओं सहित : दिलीप कुमार - श्रीमती ललिता तलेसरा, बिजयनगर, अजमेर

हिमांशु तलेसरा

ॐ अर्हम्

+91 94144 15608
+91 81122 64308

बालाजी मार्बल्स

विक्रेता : कोटा स्टोन, मार्बल, ग्रेनाईट

गुलाबपुरा रोड, बिजयनगर, जिला-अजमेर

पियुष तलेसरा

ॐ अर्हम्

+91 77423 66465
+91 63504 33401

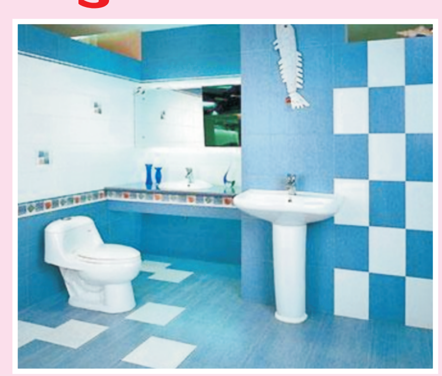

बालाजी सैनेट्री वेयर

विक्रेता : टाईल्स, सैनेट्री आईटम

गुलाबपुरा रोड, बिजयनगर, जिला-अजमेर

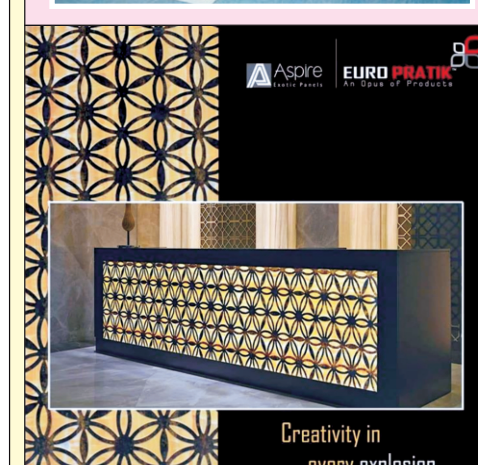

Pratik Talesara

A Style that makes
a statement

Shiv Lam.
Gala No. 19/19/A27A, Saksiria
Industrial Estate, Chincholi Phatak
Signal, Malad (West),
Mumbai-400064, Tel.: 9819282272
Email.: euroshivlam92@gmail.com

प्रेषक :
तलेसरा विकास संस्थान
98, बड़ा बाजार,
चौमुखा मन्दिर के पास,
उदयपुर-313001 (राज.)
Web : www.talesara.org
email: tvsudaipur@gmail.com

Book Post / Courier

सेवामें,
श्रीमती / श्रीमान ....

....

....

C:/Desktop/PC Talesra/PC Talesra_book_2020.cdr